INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

ISSN: 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | MARCH – 2017

'दलित साहित्य में सम्यक क्रांति की प्रेरणा : डॉ. बी.आर.अंबेडकर'

प्रा. कानडे राजाराम दादा
एस.एस.जी.एम. कॉलेज, कोपरगांव, जि. अहमदनगर

प्रस्तावना :-

डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी ने भारतवर्ष की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा राजनीतिक परिवेश का गहन अध्ययन करके दलितों के आत्मबल को जगाया है। उनमें मानव अस्मिता जगाने हेतु मानवमुक्ति के लिए अर्थात् दलितत्त्व से मुक्ति के लिए काफी प्रयास किया हैं। डॉ. अंबेडकर जी के व्यक्तित्त्व तथा कृतित्त्व का दलितों पर अमीट प्रभाव होना स्वाभाविक प्रतीत होता है। दलित साहित्य की वैचारीकि का आधार 'अंबेडकरी विचार' है जिसमें ना केवल दलित का हित ही नहीं बल्कि देशहित के लिए आवश्यक सम्यक क्रांति की पहल है। समाज, राजनीति, धर्म, अर्थ, विज्ञान, कृषि, जल कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिसमें डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी ने विचार एवं कार्य न किया हो अर्थात् वे ही दलित चेतना तथा दलित साहित्य के प्रेरणा स्त्रोत है।

'दलित साहित्य' भारतीय वर्ण तथा जाति व्यवस्था के प्रति क्रांति का बिगुल बजाने वाली दलितों की मर्मांतिक वेदना, विद्रोह, नकार तथा विज्ञान निष्ठा की ओर सबका ध्यान आकृष्ट करने वाली नई साहित्यधारा है। यह अंबेडकरी विचारों से प्रस्फुटित होकर दलित साहित्यकारों को उचित दिशा की ओर कूच कर रही एक ऐसा प्रकाश पुंज है जो अंधेरे में उतरकर गुमराह हुए भारतियों को उजाले, सत्यप्रियता, मानवता की ओर आकृष्ट कर रहा है। लिहाजा 'दलित साहित्य' एक सम्यक परिवर्तन की धारा है जिसका मूलस्त्रोत डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी है। इस बात को निम्नांकित आधार बिंदुओं की जरिए विशद किया हैं।

1.1 : सम्यक क्रांति के प्रेरक डॉ. अंबेडकर जी :-

हिंदू धर्म की वर्ण व्यवस्था ने गाँव की सीमा से बाहर रखे इस समाज का अनुभव विश्व करूणा और वेदना से भरा हुआ था। ऐसे समाज को जागृत करते हुए उनके आत्मसम्मान को जगाने का कार्य डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी ने किया है। उनकी क्रांति सब क्रांतियों में महान इसलिए है कि डॉ. अंबेडकर जी ने मृतवत, मूकसमाज को शिक्षा-संगठन तथा संघर्ष के मौलिक नारे का अपने कृतित्व के द्वारा परिचय देकर दलित साहित्यकारों को यथायोग्य प्रेरणा दी है। डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी की आत्मकथा 'मी कसा झालो' से प्रेरणा लेकर मराठी दलित साहित्यकारों ने दलित साहित्य का सृजन किया है। "आज भारतीय व्यवस्था में जो परिवर्तन दिखाई दे रहा है, वह अपने आप नहीं आया है। बल्कि इसमें 'दलित आंदोलन और दलित साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका' है। आंबेडकरवाद के बगैर दलित साहित्य का कोई मतलब नहीं है। दलित साहित्य केवल दलितों के दर्दों का दस्तावेज नहीं बल्कि इस सनातनी कुव्यवस्था को बदलने का साहित्य है, अभियान है। इसीलिए समाज क्रांति की दृष्टि से दलित साहित्य का बड़ा महत्त्व है।"[1]

दलित साहित्य ने अमानवीय, अमानूष, गुलामी - दलितत्त्व या दासत्त्व को नकारा है तो मानवता, वैज्ञानिकता, शिक्षा-संगठन-संघर्ष, इन अंबेडकरी चेतना को स्वीकारा है। प्रा. दामोदर मोरे जी ने इस दृष्टि से अंबेडकरी क्रांति की चिंगारी को इन शब्दों में अभिव्यक्त किया हैं -

"हमारे दिल की धड़कन है जयभीम । हमारे कलेजे का टुकडा है, जयभीम।
तुम चाहो तो जयभीम क्रांति है, तुम चाहो तो जयभीम शांति है।
जयभीम इन्सानियत से महकती बाग है। तुम चाहो तो जयभीम न बुझनेवाली आग है।"[2]

डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी ने विषम परिवेश का सामना करके अथक अध्ययन के बल पर अपने असरदार व्यक्तित्त्व में आत्मविश्वास, स्वाभिमान, प्रामाणिकता, कार्यमुश्तैदी एवं देशप्रेम पल्लवित किया है। 'अंबेडकरी लड़ाई की फलश्रृति' इस शोधालेख में ताराचंद्र खांडेकर जी की राय द्रष्टव्य है, "कुछ विद्वान बाबासाहेब अंबेडकर के नाम के साथ बुद्ध, फुले व कबीर इनका भी जिक्र करते हैं तो कुछ इन नामों की तरह डॉ. अंबेडकर के साथ आगरकर, लोकहितवादी, केशवसुत, मार्क्स, चार्वाक इनके साथ नाता स्थापित करते हैं। मैं कई दफा यह विचार करता हूँ कि बाबासाहेब अंबेडकर यदि न होते तो दलित साहित्य का जन्म होता ? दलित साहित्य का जन्म होने के लिए डॉ. बाबासाहेब को एक सम्यक सांस्कृतिक क्रांति को जन्म देना पड़ा। यह सम्यक क्रांति बाबासाहेब ने न की होती तो दलित साहित्य अथवा आज के दलित साहित्यकार भी मशहूर न हुए होते।"[3] इस उद्धरण से यह स्पष्ट होता है कि दलित साहित्य के बीजांकुर तथा सम्यक क्रांति के प्रेरणास्त्रोत है, 'डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी '।

1.2 दलित साहित्यकारों की मूल प्रेरणा में अंबेडकरी विचार :-

भारतियों को 'सम्यक क्रांति' का सपना दिखाने वाले अथवा सम्यक क्रांति की चेतना प्रदान करने वाले महामानव डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी है। जिन्होंने गुंगे - बहरे, पीड़ित - अपाहिज - शक्तिहीन हुए दलित समाज को पहली दफा आत्मशोध, आत्मचिंतन करने हेतु विवश किया है। उन्हें शिक्षा तथा साहित्य के प्रति विशेष दिलचस्पी रही है उनकी दृष्टि में "किसी भी समाज की उन्नति उस समाज की शैक्षिक तरक्कि पर आश्रित है।"[4] सन 1954 ई. में नागपूर के विदर्भ साहित्य संम्मेलन में डॉ. बी. आर.. अंबेडकर जी का दलित साहित्यकारों के प्रति अपना विलक्षण प्रेमभाव इसतरह प्रकट हुआ है, "मुझे साहित्यकारों को यह आग्रहपूर्वक बताना है कि आपके साहित्य में उदात्त जीवनमूल्य अभिव्यक्त हो सके। आपका ध्यान संकुचित तथा मर्यादित न रखे, उन्हें विस्तृत कर दे। आपकी वाणी चार दीवारों तक सीमित न करें, उसे विस्तार दे। आपकी लिखावट आपके प्रश्नों तक सीमित न करें। उसे इतना प्रखर करें कि ग्राम-देहातों का अज्ञान रूपी अंधेरा मिट सके। हमारे देश में दु:खियों का बड़ा समूह हैं। यह बात कभी न भूले। उनका दु:ख, यातनाएँ, विवशता जान ले और अपने साहित्य के माध्यम से उनमें सुधार करने हेतु प्रयास करें। उनमें ही सही मानवता है।"[5] दलितत्त्व रूपी पीडा, वेदना वैश्विक है। इसकी ओर दलितों ने गौर करना अनिवार्य है और इस दृष्टि से अज्ञान, अशिक्षा को मिटाकर ज्ञानी, आत्मविश्वासी, स्वाभिमानी, कर्मठ यशस्वी व्यक्ति होने हेतु कार्यमुश्तैदी को बढ़ावा देना अनिवार्य है। अत: अंबेडकरी चेतना मुर्दों में जान डालती है और उसे कार्यतत्पर करने हेतु प्रेरित करती है। इसी प्रेरणा का प्रथम दलित नाटक 'युगयात्रा' है जो छह लाख दर्शकों के बीच खेला गया है।

1.3 डॉ. बी. आर. अंबेडकर के व्यक्तित्त्व पर महात्माओं के विचारों का प्रभाव :-

कुछ विद्वान दलित साहित्य की प्रेरणाओं में डॉ. अंबेडकर के साथ ही तथागत गौतम बुद्ध, कबीर - रैदास, महात्मा फुले आदि के विचारों को स्वीकारते हैं। वस्तुत: ये सारे अपने समय के क्रांतिकारी युगपुरूष रहे हैं। इनके विचारों का नयी पीढी पर असर होना स्वाभाविक या सहज है। इस बात को स्वीकृति देते हुए डॉ. अंबेडकर जी ने अपने भाषणों, लेखों तथा ग्रंथों में इन महान विभुतियों के प्रति आदरभाव व्यक्त किया हैं। इतना ही नहीं उन्होंने बुद्ध - कबीर एवं फुले के विचार तथा महान कार्य के प्रति चिंतन करके अपनी गतिविधियों को निश्चित किया हैं।

डॉ. अंबेडकर जी के व्यक्तित्त्व पर सर्वाधिक प्रभाव महात्मा फुले के व्यक्तित्त्व तथा क्रांतिकारी कृतित्त्व का हुआ है। आधुनिक काल के युगपुरूष महात्मा फुले समाज परिवर्तन चाहते थे। इस संबंध में डॉ. एस्. प्रीति ने यह कहा है, "ज्योतिबा फुले की लडाई समाज में फैली अराजकता व बुराइयों से थी, न कि भारतियों को अंग्रेजों से छुडाने की। इनका मानना था कि भारतीय समाज में समानता अंग्रेजी शासन के प्रयासों द्वारा लायी जा सकती है। वे शासन बदलाव से अधिक समाज परिवर्तन को मानते थे।"[6] अर्थात् स्वातंत्र्य के पहले समाज परिवर्तन की जरूरत है जिसमें समानता, बंधुता दिखाई दे। समाज परिवर्तन के बजाय प्राप्त स्वातंत्र्य केवल नाम स्वरूप रहेगा। ऐसा होने से विषमता अधिक बढने की संभावना है। जहाँ दलितों की प्राथमिक आवश्यकताओं की तरफ नजरअंदाज करके उन्हें गुलाम की भाँति समझने वाले जातिवादी शासक होने पर दलितों के साथ वे कैसे पेश आएँगे? इस बात की ओर महात्मा फुले ने निर्देश दिया था जो काफी असरदार रहा है। अत: उन्होंने दलितों की बुनयादी जरूरतों को पूर्ण करने हेतु उन्हें सक्षम करने का प्रयास किया हैं। उनके कृतित्व का गहरा प्रभाव डॉ. अंबेडकर जी के व्यक्तित्व पर होना सहज एवं स्वाभाविक था क्योंकि वे उच्चशिक्षित होकर भी अस्पृश्यता के दु:ख से बाहर न थे। यही कारण है कि उन्होंने महात्मा फुले के अथक शिक्षाकार्य से प्रभावित होकर दलित समाज उद्धार हेतु "शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो।"[7] यह नारा दलितों के हृदय में उतारणे का मौलिक कार्य किया है। दलितों के पक्षधर, सच्चे वकील महात्मा फुले जी रहे है। उनकी कार्यशैली का प्रभाव जिसतरह अंबेडकर जी पर पडा है उसीतरह तथागत गौतम बुद्ध एवं मध्यकालीन श्रेष्ठ समाज सुधारक महात्मा संत कबीर के विचारों का भी उनपर गहरा असर हुआ है।

1.4 दलित साहित्य की उर्जा: अंबेडकरवाद :-

'ब्राह्मणवादी' सोच को बेनकाब करना ही अंबेडकरवादी सोच की मंजिल है। "ब्राह्मणवादी सोच यानी किसी को जन्म के आधार पर विशेषाधिकार से संपन्न कर देना, उसे देवता का दर्जा दे देना, चाहे वह कितना ही बेकार, अज्ञान, कुटिल ही क्यों न हो। यह सोच केवल ग्रामीण या अनपढ़ लोगों में ही नहीं बल्कि स्कूलों के प्रधानाचार्य तक में है।"[8] अर्थात् ब्राह्मणवादी सोच की चपेट में आए कई दलितों को बहुत परेशानियों का सामना करना पडा रहा हैं। इस यातना या वेदना से मुक्त होने का रास्ता अंबेडकरवादी विचारधारा में है। इस संबंध में प्रा. दामोदर मोरे जी ने यह कहा है, "अंबेडकरवाद यह 20वीं शदी का क्रांतिकारी विचार है। अंबेडकरवाद दलित साहित्य की उर्जा है। आगले कई सदियों को उजाला देने वाला वह विचार हैं। मुनष्य जीवन को सुंदर करनेवाली मूल्यधारा ही अंबेडकरवाद है।"[9] अर्थात् अंबेडकरी विचार धारा दलित साहित्य की उर्जा तथा प्रेरणास्थान है। यह विचार ब्राह्मण तथा पूंजीवाद के खिलाफ आवाज उठाता है। डॉ. बी. आर अंबेडकर जी ने इस तथ्य को समझाने का प्रयास किया है। जैसे "ब्राह्मणवाद और पूँजीवाद ये दोनों मेहनतकश लोगों के दुश्मन हैं, क्योंकि ये दोनों समता, स्वातंत्र्य, बंधुता के विरूद्ध हैं। ब्राह्मणवाद गुण और गरिमा को नकारने वाला वाद है।"[10] इसके विपरित अंबेडकरवाद मानव और उसकी मानवता को अत्यधिक महत्त्व देने वाली विचार धारा है।.

1.5 अंबेडकरी मौलिक सुझाव :-

दलित साहित्य की मूल प्रेरणा अंबेडकरी होने का एक पहलु अंबेडकरी मौलिक सुझावों में देखा जाता हैं। उन्होंने हर पल देश उन्नति तथा दलितोद्धार के बार में विमर्श किया है। उनका विमर्श चाहे लिखित तथा मौखिख हो उनमें भारतीय समाज की तरक्कि की बातें अभिव्यक्त हैं।

उन्होंने खासकर दलितों को हिंदुओं की कर्मकांड पद्धतियों से दूर रहने की नसिहत दी है। जैसे - तुलसी माला धारण करने अथवा रामधुन गाने से आपका कर्जा नहीं घटेगा। न ही लगान कम होगी, तीर्थ करने से किसी की भी तनख्वाह नहीं बढ़ेगी, गंगास्नान करने, वृत - उपवास रखने, तिलक लगाने, चोटी बढ़ाने से काई फायदा नहीं है। आपको इन सारी बुरी बातें समझकर छोडनी हैं। स्वयं को गुलाम समझने का विचार पूर्णतया त्याग दो। गुलाम को यदि उसकी गुलामी का एहसास होने पर ही वह उचित बदलाव करेगा और अपने जीवन नौका को नया मोड़ देगा। इसलिए दलित साहित्य इसी निर्देश पर कूच हुआ है।

" गाँव में रहने के बजाय डॉ. अंबेडकर जी ने दलितों को शहरी क्षेत्रों में बसने की सलाह दी। शहरों में छुआछूत, भेदभाव और सामूहिक अत्याचार की संभावना बहुत कम होती है। दलितों को मरे हुए पशुओं को उठाने, पशुओं की खाल निकालने तथा मृत पशुओं का मांस खाने, दाई का काम करने, गंदे कपडे धोने जैसे अपवित्र काम के परित्याग की सलाह दी है और दलितों ने पारंपारिक व्यवसाय को छोडकर मौलिक व्यवसाय करने की सलाह दी हैं।"[11] अर्थात् अंबेडकरी मौलिक सुझावों के धरातल पर दलित साहित्यकारों को साहित्य सृजन करने की शक्ति पल्लवित हुई। इसी अंकुरित फूल को ताकतवर करने का प्रयास अंबेडकरी आंदोलन कर्मियों का रहा हैं जो दलित साहित्य की देन है।

1.6 दलित आंदोलनों का गहरा असर :-

दलित आंदोलनों की मूल प्रेरक शक्ति डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी का अथक योगदान है। उन्होंने बीसवीं सदी के तीसरे दशक में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करके सबसे पहले धार्मिक अधिकारों की प्राप्ति हेतु अस्पृश्यता निर्मूलन का कार्य किया। अर्थात् उन्होंने 1927 में महाड के तालाब के जल से स्पर्श करनेवाला सत्याग्रह या जनआंदोलन, अनेकों की उपस्थितियों में मनुस्मृति दहन अमरावती, मुंबई, नाशिक के प्रसिद्ध मंदिरों में दलित प्रवेश, धर्मान्तर का प्रसंग आदि दलितों के आत्मविश्वास को बढावा देनेवाले आंदोलनों में अपनी कार्यकुशलता, विद्वता, साहस, आत्मविश्वास, दृढता, कार्यतत्परता प्रस्तुत की हैं।

दलितों के ये आंदोलन मुर्दों में जान डालने वाला प्रतीत होता है अर्थात् इनसे अनेक साहित्यकारों को उचित प्रेरणा मिली। अंबेडकरी आंदोलनों की सफलता ही 'दलितों की आजादी' का प्रथम चरण था। केशव नारायण देव ने यह कहा है, "क्रांति की चिनगारी जिनके हृदय में प्रज्वलित होती है, वही क्रांति का अंग हो जाते हैं। उन्हें भाषा, प्रांत, दूरियों की बाधाएँ सताती नहीं।"[12] अर्थात् क्रांति की चेतना के परिणाम स्वरूप दलित साहित्य का विकास हो पाया है।

1.7 दलित में स्वाभिमान जगाने में प्रेरक - विराट शक्ति :-

दलितों की मानसिक स्थिति में सुधार लाने हेतु, महात्मा फुले जी की शैक्षणिक सुधारणावादी दृष्टि में चार चाँद लगाने हेतु डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी ने दलितों को ' शिक्षा - संगठन तथा संघर्ष ' का नारा दिया । इसमें नित्य संघर्षरत होने के साथ ही संगठन शक्ति को अनन्यसाधारण महत्त्व की बात को अपने कृतियों द्वारा समझाई है। 'मानवता' की चाहत में, समाज परिवर्तन के उद्देश्य में तथा दलितों का स्वाभिमान, आत्मविश्वास जगाने के प्रयास में दलितों का संगठन तथा संघर्ष साहित्य मे चित्रित है अर्थात् इसका माध्यम साहित्य है जिसने दलित साहित्य का नाम प्राप्त किया है "दलित साहित्य एक गहरे घाव की कहानी है और घाव कभी न भरने की कहानी है।"[13] अर्थात् 'दलित साहित्य' एक दर्दभरा राग है जिसके द्वारा दलितों में अंबेडकरी चेतना जगाने का प्रयास है।

अंबेडकरी विचारक डॉ. गंगाधर पानतावणे जी का यह कहना काफी सार्थक है, "दलितों को आत्मविश्वास, आत्मसम्मान रूपी उजाला देनेवाला युगप्रवर्तक डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी समूचे दलित जीवन का प्रेरणास्थल है। इसे मानव जाति के इतिहास में कोई विकल्प ही नहीं हैं। वे जन्म न लेते तो दलितों को गर्दन उठाकर चलना मुश्किल हो जाता, शरीर पर अच्छे कपडे पहनना मुश्किल हो जाता। मनू हाथ में किताब लेने न देता, स्वतंत्र विचार करने न देता, सभा में साहस न आता, सहजोद्रेक में काव्य प्रस्फुटित न होता, ओहदा या उपाधियाँ न मिलती, उनकी सम्मान की रक्षा न होती, डॉ. अंबेडकर जी याने एक विराट मंत्र था जिससे दलित साहित्य अभिभूत है।"[14] अर्थात् डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी ने दलितों में मानवीय अस्मिता जगाकर उनमें स्वाभिमान जगाया है। इसलिए वे ही दलित साहित्य के मूल प्रेरक या प्रेरणा स्रोत है।

दलित समाज में क्रांति की चेतना जगाने का मौलिक कार्य डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी ने अपने व्यक्तित्त्व तथा कृतित्त्व के जरिए किया है। वे एक ऐसे क्रांतिकारी युगपुरूष, महामानव - शिल्पकार ठहरे है जिन्होंने मरते दम तक भारत देश के दुश्मनों का सामना करके सबको मानवता का रास्ता दिखाया है। इस संबंध में निम्नांकित काव्यपँक्तियाँ गागर में सागर भरने का कार्य करती है जैसे ज्ञ

" तू झालास परिस्थितीवर स्वार
आणि घडविलास नवा इतिहास
तू झालास मूक समाजाचा नायक
आणि जागा केलास उभा बहिष्कृत भारत "।[15]

अर्थात् डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी ने विषम परिस्थितियों पर सफलता प्राप्त करके दलितोंद्धार का महत् कार्य किया है। उनकी चेतना ही दलित साहित्य की चेतना है, इसमें कोई संदेह नहीं।

निष्कर्ष :-

'दलित सहित्य' अंबेडकरी चेतना का एक ऐसा गुलदस्ता है जिसका अंतरंग मर्मांतिक वेदनाओं से उभरा है। वेदना, नकार, विज्ञानवादी सोच भारतीय समाज व्यवस्था की पुरानी रूढ़िग्रस्त मानसिकता, परंपरावादी, यथास्थितिवाद पर कई सवाल उठाती है और इसका खंडन भी करती है। खंडन से तात्पर्य प्रतिशोध नहीं बल्कि सच्चाई (यथार्थता), स्वातंत्र्य, समता, बंधुता, सामाजिक न्याय की प्राप्ति की चाहत है ताकि दलितों का दलितत्त्व, गुलामी की भावना दूर होकर उनमें आत्मसम्मान, इज्जत बढ़ाने तथा स्वाभिमान के जीवन की खुशियाँ प्राप्त करने में किसी के प्रति अन्याय न करने एवं किसी का अन्याय न सहने की भूमिका में दलितों को जीवन की सुखद अनुभूति मिल सके। भारतीय समाज में परिव्याप्त युगों युगों की दासता, छुआछूत की भावना, गरीबी-शिक्षा का अभाव दलितों के प्रति घृणाभाव आदि समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु पीड़ितों में मानवतावादी अच्छे दिन की कामना पूर्ति में डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी आजीवन संघर्षरत रहे। उनके 'शिक्षा-संगठन-संघर्ष' के मौलिक इरादों ने भारतीय मृतवत समाज में उर्जा - चेतना का संचार किया है। उनकी सम्यक क्रांति की चेतना ही दलित साहित्य का प्राणभूत सौंदर्य समझना चाहिए। अंबेडकरी विचार वर्तमानकालीन भयावह समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए काफी प्रासंगिक है। इसमें कोई संदेह नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. विमल कीर्ति, 'सामाजिक क्रांति की दृष्टि से दलित समाज का महत्त्व' शोधालेख - संपादक प्रा. जाधव / डॉ. सगरे 'सामाजिक क्रांति और दलित समाज' पृष्ठ - 33
2. प्रा. अनिल ढवले, 'दामोदर मोरे की अंबेडकरवादी कविता : सामाजिक क्रांति की सहज प्रहरी' शोधालेख संपादक प्रा. जाधव तथा भरत सगरे, 'सामाजिक क्रांति और दलित साहित्य' पृष्ठ - 303
3. संपादक, गंगाधर पानतावणे, 'दलित साहित्य चर्चा आणि चिंतन', पृष्ठ - 174
4. डॉ. ईश्वर नंदपुरे, 'दलित नाटक आणि रंगभूमि' पृष्ठ 73
5. वही पृष्ठ - 72
6. संपादक मोहनदास नैमिशराय, 'बयान' मासिक पत्रिका - मई - 2013, पृष्ठ 14
7. डॉ. भरत सगरे, 'दलित साहित्य : अनुसंधान के आयाम,' पृष्ठ - 14
8. वेद प्रकाश, 'अंबेडकरवादी कहानी की भूमिका' संपादन - तेजसिंह - 'अपेक्षा' जुलाई - दिसंबर 2009, पृष्ठ - 45
9. गंगाधर पानतावणे (संपादक), 'अस्मितादर्श' विशेषांक 2011, पृष्ठ - 103
10. मुकेश सिंह, 'डॉ. भीमराव अंबेडकर' पृष्ठ - 227
11. डॉ. बंजारा गोवर्धन, 'दलित चेतना के संदर्भ में जगदीश एवं जोसेफ मेकवान के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन' पृष्ठ - 31
12. डॉ. गंगाधर पानतावणे, 'वादळाचे वंशज', पृष्ठ - 48
13. प्रो. टी.वी. कट्टीमनी 'दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र का समाजविज्ञान' (शोधालेख) संपादक तेजसिंह 'अपेक्षा' जुलाई-दिसंबर-2009 अंक 28 पृष्ठ-21
14. डॉ. भालचंद्र फडके, 'दलित साहित्य : वेदना व विद्रोह,' पृष्ठ - 44
15. डॉ. सुनिल चंदनशिवे, 'मराठी दलित कविता : एक चिकित्सक अभ्यास,' पृष्ठ - 61